Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-1, June 2019
Impact Factor: 4.081
www.researchguru.net

माखनलाल चतुर्वेदी की पत्रकारिता में अंग्रेजों की नीतिओं का प्रतिकार

प्रियंकर लारिया, शोधार्थी, इतिहास विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, (म.प्र.)

शोध सारांश– हिन्दी साहित्य में ऐसे कई विद्वान हुये हैं जिन्होंने अपने सृजन कार्य से देशकाल को इतना प्रभावित किया है जिसकी ख्याति आज भी हमें देखने को मिलती है ऐसे ही एक प्रसिद्ध विद्वान माखनलाल चतुर्वेदी हिन्दी जगत के विख्यात साहित्यकार, प्रखर पत्रकार तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी रहे हैं। हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में यथा कविता, कहानी, नाटक तथा निबंधों के माध्यम से उन्होनें तत्कालीन भारत की परतंत्रता, किसानों तथा मजदूरों की व्यथा, वंचित तबकों की पीड़ायें तथा महिलाओं की दशा एवं स्थिति को बखूबी दिखलाया है। इसके साथ ही उनकी कृतियों में राष्ट्र प्रेम, अंग्रेजों के द्वारा की गयी हिंसक प्रवृत्तियाँ तथा साधारण जनों की समस्याओं का सजीव चित्रण किया है। ठीक इसी प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन की विभिषिका, राष्ट्र भक्ति तथा अंग्रेजी शासन का बहिष्कार उन्होनें अपने पत्र कर्मवीर के माध्यम से प्रस्तुत किया। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी है जिसका प्रतिबिम्ब आज भी उतना ही सजीव है जितना तत्कालीन समय में था।

कुंजी शब्द– पत्रकारिता, कर्मवीर, स्वतंत्रता संग्राम, अंग्रेजी शासन, प्रतिकार

माखनलाल चतुर्वेदी के पितामह डूगरसिंह शास्त्री राजस्थान के जयपुर रियासत के राणीला गाँव में रहते थे।[1] वहाँ से वह होशंगाबाद के बाबई नामक ग्राम में आकर बस गए थे। बाबई होशंगाबाद तहसील का एक बड़ा गाँव है। यह होशंगाबाद से 14 मील पूर्व में पुरानी बाबई सड़क पर बसा हुआ है। यही बाबई माखनलाल चतुर्वेदी की जन्मभूमि है। माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म बाबई, होशंगाबाद में 4 अप्रैल, 1889 को हुआ था। उनके पिता पं. नंदलाल चतुर्वेदी शिक्षक थे और माता का नाम सुंदरीबाई था। उनकी आरंभिक शिक्षा छिदगाँव में हुई जिस प्राइमरी स्कूल में पिता ने प्राथमिक शिक्षा पायी थी, उसी स्कूल में उनका दाखिला कर दिया गया। वहाँ से उन्होंने सन् 1901 में प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण की।[2] सन् 1905 में प्राइमरी परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, इन्होंने 'प्राइमरी टीचर्स ट्रेनिंग' की परीक्षा जबलपुर केन्द्र से उत्तीर्ण की।

प्रारंभ में कवि अपनी रचनाओं में माखनलाल चतुर्वेदी नाम ही दिया करते थे, 'सुबोध–सिन्धु' के हिन्दी संस्करण में कवि ने सन् 1912 में 'शक्ति पूजा' पर लेख लिखा था।[3] जिसके कारण पुलिस द्वारा राजद्रोह का आरोप लगाया गया किन्तु श्री माणिकचंद जैन की बुद्धिमानी और कवि की कार्यकुशलता एवं सावधानी के कारण यह आरोप गलत सिद्ध हुआ। तब से वह 'श्रीगोपाल', 'भारत–सन्तान', 'कुछ नहीं', 'भारतीय', 'सुधार–प्रिय', 'पशुपति', 'नीति–प्रेमी', 'एक विद्याथी', 'एक निर्धन विद्यार्थी', 'एक भारतीय प्रजा', 'एक नवयुवक', 'तरूण भारत', 'एक प्रान्तीय वाणी', 'एक उच्च शिक्षित', 'एक भारतवासी', 'श्रीयुत' नवनीत', 'श्री विश्वव्याप्त', 'श्री चंचरीक', 'श्री शंकर', 'श. रा. श.', 'क्ष. त्र. ज्ञ.', 'वनवासी', 'वनमाली', 'एक भारतीय आत्मा', जैसे चित्र–विचित्र नामों से लिखते रहे हैं।

भारत में पत्रकारिता का प्रारंभ अठारवीं शताब्दी के अन्त से होता हैं, जब सन् 1770 में भारत का पहला समाचार पत्र हिक्की जगट या कैलकटा एडवरटाइजर कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। तब भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी की नीतियों के विरुद्ध आक्रोश भारतवासियो में ब्याप्त होने लगा था, शुरुआत में जो समाचार–पत्र भारत में स्थापित हुए उनको अंग्रेजों ने अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया जैसे की 'बंगाल गजट', 'कलकत्ता गजट', 'किरकारु', 'इंडियन हेरल्ड', 'बॉम्बे हेरल्ड', 'मद्रास गजट', 'बॉम्बे कूरियर' आदि। इन समाचार–पत्रों का उद्देश्य केवल मनोरंजन और सूचना देना था और आमतौर पर ये समाचार–पत्र गैर–राजनैतिक होते थे। भारत

में 1818 से पहले भारतीय भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित नहीं हुए। पहला भारतीय समाचार पत्र 'दिग्दर्शन' बंगाली भाषा में 1818 में प्रकाशित हुआ उसके बाद 'समाचार चन्द्रिका', उर्दू समाचार–पत्र 'जाम–ए–जहाननामा' 1822 में, 1826 को 'उदन्त मार्तण्ड' नामक हिन्दी पत्र का प्रकाशन कलकत्ता से हुआ धीरे–धीरे देशी पत्रों की बाढ़ सी आ गयी। उत्तर प्रदेश से 'बनारस अखबार' पहला हिंदी पत्र 1845 में, मध्य भारत में 1849 में 'मालवा अख़बार', राजस्थान से 'मजहरूल सरूर' 1849, दिल्ली से 1857 में 'पयामे–आजादी', हरियाणा से 1884 में 'जैन प्रकाश', बम्बई से 1886 'सत्यदीपक', गुजरात में श्री जमनालाल बजाज की सलाह पर गाँधी जी ने 19 अगस्त 1921 से 'हिंदी नवजीवन' का आरंभ किया। इन सभी समाचार–पत्रों के माध्यम से ब्रिटिश शासन का विरोध होने लगा।

इसी समय एक प्रसिद्ध विद्वान 'माखनलाल चतुर्वेदी' हिंदी जगत के विख्यात साहित्यकार, प्रखर पत्रकार तथा स्वतंत्रता सेनानी रहे हैं। 17 जनवरी 1920 को कर्मवीर का पहला अंक प्रकाशित हुआ जिसके संपादन का दायित्त्व माखनलाल चतुर्वेदी जी को मिला। माखनलाल ने अंग्रेजों की नीतियों का विरोध 'कर्मवीर' में लेखन के द्वारा प्रारम्भ किया। 17 जुलाई 1920 को पहला लेख गौवध, कसाई खाना के खिलाफ कर्मवीर में लिखा। माखनलाल चतुर्वेदी ने अपनी लेखनी के माध्यम से ब्रिटिशकालीन भारत एवं स्वतंत्रोत्तर काल में स्थानीय समाज में विद्यमान विषमताओं तथा असमानताओं का विरोध किया। उनके अनुसार सिर्फ राजनैतिक स्वतंत्रता ही सभ्य मानव की कसौटी नहीं है बल्कि जब तक समाज में बराबरी नहीं आ जाती, तब तक सही मायने में आजादी अधूरी है। इसलिए उनका लेखन कार्य समाज के केन्द्र में रहा एवं परिधि के रूप में समाज की प्रत्येक गैर बराबरी को उन्होंने अपने लेखन कार्य के माध्यम से उठाया।

सन् 1907 में प्रयाग में शिक्षा ग्रहण करते हुए आपने पं. मदनमोहन मालवीय की स्वीकृति से अभ्युदय के कार्यालय में सम्पादन कार्य शुरू कर दिया था और पत्रकारिता की दीक्षा ली। उस समय खण्डवा में केवल एक मराठी साप्ताहिक 'सुबोध सिन्धु' पत्र प्रकाशित होता था। इस पत्र के बारे में कहा जाता था कि यह पत्र नाम मात्र की सूचना प्रदान करता था। इसमें आये गये और मरे के ही समाचार छपा करते थे। समाज में किसी महत्वपूर्ण मुद्दों पर कोई सूचना नहीं मिलती थी।[4] सन् 1910 तक यह पत्र समाप्ति की कगार पर आ चुका था। माणिकचन्द्र जी सत्यपरामर्श और प्रयत्नों के फलस्वरूप उसके संचालकों ने 'सुबोध–सिन्धु' का हिन्दी संस्करण निकालना स्वीकार कर लिया और माणिकचन्द्र जी के आग्रह से माखनलाल ने उसमें काम करना शुरू कर दिया।[5] माखनलाल चतुर्वेदी बिना किसी आर्थिक सहायता के 'सुबोध–सिन्धु' में लेख, समाचार लिखने लगे। इसके साथ ही वह अध्यापकी कार्य भी करते रहे।

सन् 1912 में उन्होंने एक लेख शक्ति पूजा' पर लिखा। यह लेख खंडवा से प्रकाशित हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी के इस लेख पर राजद्रोह का आरोप लगा दिया गया। स्थानीय पुलिस सुपरिटेंडेंट मिस्टर फेयरवैदर ने उन्हें बुलवाया और उन्हें घूरकर कहा– टुम सिडीशन लिखता है ? जानता है, तुमको हम कुचल डालेगा? माखनलाल ने लिखा, ''कलम के लिए प्रसाद मिलने का यह पहला अवसर था, अतः मुझे लगा कि अब शायद घर वापस नहीं लौटने दिया जायेगा। मेरी पत्नी, माँ और मेरे छोटे भाई–बहन घर में थे। जब उन्हें पता चला कि अखबार में लिखने के कारण मुझे पुलिस पकड़ कर ले गई है, तब घर में हाय–हाय और रोना–पीटना मच चुका था। वे ऐसे ही दिन थे जब किसी राजद्रोही को पकड़वाना किसी डाकू या हत्यारे को पकड़वाने से अधिक महत्व की चीज मानी जाती थी।''[6] 1913 में माखनलाल चतुर्वेदी ने कालूराम गंगराड़े के सहयोग से 'प्रभा' का संपादकीय दायित्व भी संभाल लिया।

'प्रभा' के माध्यम से वे स्वामी श्रद्धानंद, विष्णुदत्त शुक्ल, सैयद मीर अली मीर और जगन्नाथ प्रसाद आदि के संपर्क में आये। मणिकचन्द्र जैन और कालूराम गगराड़े ने माखनलाल

चतुर्वेदी को 'प्रभा' के वास्तविक संपादक का दायित्व सौंपा। 'प्रभा' ने शीघ्र ही माखनलाल चतुर्वेदी को पं. माधवराव सप्रे, गणेश शंकर विद्यार्थी, कामताप्रसाद गुरू, महावीर प्रसाद द्विवेदी, महात्मा मुंशीराम रायबहादुर, पं. विष्णुदत्त शुक्ल जैसे उस युग के ख्यातिलब्ध लोकनायकों में शामिल कर दिया।[7] कालूराम विश्वासों से थियोसोफिस्ट थे और श्रीमति एनीबीसेण्ट उन्हें बहुत मानती थी। वे साधुचरित्र व्यक्ति थे। कालूराम जी जाति–सुधार नाम का अखबार भी निकालते थे। वे हिन्दी भाषा की अत्यधिक उन्नति चाहते थे। हिन्दी में इस समय अकेला अच्छा मासिक पत्र 'सरस्वती' निकलता था। 'सरस्वती सर्वगुणसम्पन्न मासिक पत्रिका थी।[8] निर्णय लिया गया कि माखनलाल जी अध्यापकी से त्यागपत्र दे और इस नये पत्र के सम्पादन में सहयोग दे। प्रारम्भ में सहायक सम्पादक के रूप में उनका वेतन 30 रूपये मासिक दिये जाने की बात रखी।

श्री कालूराम जी गगराड़े के नाम से ही डिक्लेरेशन लिया गया। पत्र का नाम 'प्रभा' रखा गया। सम्पादक कालूराम जी रहे। मुद्रण पूना के चित्रशाला में होने की व्यवस्था हुई। प्रथम अंक 7 अप्रैल 1913 को निकला। 'प्रभा' के प्रारम्भिक पाँच–छ' अंको में महात्मा स्टेड का जीवन धारावाहिक रूप से दिया गया। 'प्रभा' के जब छः अंक निकल गये, तो उसके सहकारी सम्पादक माखनलाल चतुर्वेदी 'एक भारतीय आत्मा' ने बम्बई बाजार की पाठशाला की 13 रूपये मासिक की पाठकी से 1913 की 26 सितम्बर को त्यागपत्र दे दिया और अध्यापकी से सदा–सर्वदा के लिए अपना नाता तोड़ लिया।[9] राष्ट्रीय ज्ञान के गुरू द्रोणाचार्य खंडवा में जब माखनलाल जी से मिलने पधारे थे, तभी उन्होंने सप्रे जी को पहली ही नजर में अपना गुरू मान्य कर लिया था। सप्रेजी का व्यक्तित्व ऐसा ही पुरूषार्थमय था।

'प्रभा' के निकलने के बाद से माखनलाल जी ने अपने साहित्यिक जीवन की शोभान्वित परिधियों के विश्वसनीय पड़ाव और शिविर तैयार करने शुरू कर दिये थे।[10] काफी दिनों से मध्यप्रदेश में वैधानिक सुधारों का प्रश्न चल रहा था। आखिर 8 नबम्वर 1913 को मध्यप्रदेश के लिए विधान–सभा की स्थापना की घोषणा की गयी। तुरन्त ही उसके चुनाव के लिए सरगर्मिया प्रारम्भ हो गई। माखनलाल जी इस पहली ही मुलाकात में विष्णुदत्त जी शुक्ल से अत्यन्त प्रभावित हुए। इसी यात्रा में विष्णुदत्त जी ने माखनलाल को अपना निकट का मित्र भी बना लिया। इस विधानसभा की पहली बैठक 17 अगस्त 1914 को प्रारंभ हुई। इस सभा के एक निर्वाचित लोकप्रिय सदस्य पं. विष्णुदत्त जी शुक्ल भी हुए।[11] इसी वर्ष के अक्टूबर में कानपुर से श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' साप्ताहिक पत्र को निकाला। अप्रैल 1913 में खंडवा से 'प्रभा' निकली। प्रभा राष्ट्रभाषा की सेवा को समर्पित पत्रिका थी।

प्रेस की अव्यवस्थाओं के कारण फरवरी 1914 में 'प्रभा' के प्रथम वर्ष के 12 अंक निकल जाने के बाद हिन्दी मासिक का प्रकाशन उस समय तक के लिए स्थगित करना पड़ा, जब तक कि प्रेस की कोई सुनिश्चित व्यवस्था न हो जाय। दशहरे के अवसर पर गणेशशंकर जी व माखनलाल जी का प्रथम साक्षात्कार हुआ और इस साक्षात्कार में 'प्रभा' के नवोत्थान के लिए जैसे खंडवा की अशक्त शक्तियों को एक सुयोग मिला। गणेशशंकर जी जब खंडवा आये और यहाँ विचार विमर्श हुआ तो उन्होंने कानपुर में अपने प्रताप प्रेस से इस मासिक पत्रिका को दुबारा जीवित करने का प्रण किया। प्रभा एक वर्ष निकलकर बंद हो गई। 1915 में उसका पुर्नप्रकाशन हुआ। 1915 के मार्च से 'प्रभा' के द्वितीय वर्ष का प्रथम अंक पूर्ववत् साज–सज्जा के साथ निकला।[12] यह कानपुर से एक वर्ष निकली, 1916 में फिर बंद हो गई। गणेशशंकर जी ने भी 'प्रभा' में कुछ लेख लिखे लेकिन वही अन्य नाम से अपने 'श्रीयुत् सत्येन्द्र' और 'श्री आदित्य' नाम की अनेक रचनाएँ प्रेषित की। उधर 'प्रताप' में माखनलाल जी ने भी तिलक की गरम दलीय राजनीति के समर्थन में अनेक लेख अन्य नामों से लिखे। यद्यपि ये लेख सामाजिक विषयों पर ही होते।[13]

1917 में माखनलाल को विद्यार्थी जी ने कानपुर बुला लिया और 1918 में प्रताप प्रेस से 'प्रभा' का पुनः प्रकाशन शुरू हुआ। विद्यार्थी जी के जेल चले जाने पर कानपुर जाकर

माखनलाल ने 1923 में 'प्रताप' के संपादन का दायित्व सँभाला। दोनों ही महापुरूषों की खंडवा–कानपुर की आवाजाही निरंतर बनी रही। प्रखर संपादक–पत्रकार के रूप में माखनलाल की ख्याति देश भर में फैल गई थी। 1909 ई. के सुधार अधिनियम के विषय में माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा कि यह अधिनियम हमें हमारी वर्तमान स्थिति से ऊँचा अवश्य उठायेगा, लेकिन हमारी दशा इतनी अधिक दयनीय और भयंकर हो गयी है, कि उसके सामने यह सुधार बहुत ही कम होगें। यह संसार बहुत ही तीव्र वेग से आगे बढ़ रहा है अतः आज जिस सुधार की बात की जा रही है वह सुधार दस वर्ष पूर्व ही हो जाना चाहिए था। इसलिए इन सुधारों पर बहुत अधिक उत्साहित होने की आवश्यकता नहीं है। यह एक्ट हमें अर्न्तराष्ट्रीय जगत में कोई विषेष स्थान प्रदान नहीं करता है।

माखनलाल चतुर्वेदी ने नौकरशाही के चुंगल से मुक्त होने के लिए पूर्ण रूप से मांग की कि हमारे मंत्री इतने सशक्त होने चाहिए कि वे नौकरशाही की मनमानी और उसके द्वारा होने वाले जनता के अधिकारों के हनन को रोक सकें। अधिनियम जब सामने आया है तो उसका बहिष्कार न करते हुए उचित उपयोग करें। लेकिन उससे पूर्ण रूप से संतुष्ट न होकर सुधार के लिए हमेशा प्रयत्न जारी रखे। माखनलाल चतुर्वेदी ने स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय अस्मिता को स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उस काल की समस्त छोटी–बड़ी घटनाओं पर उन्होंने अपनी लेखनी चलाई। खिलाफत आन्दोलन 1919 में खिलाफत समस्या के कारण हिन्दू मुस्लिम एकता की समस्या बहुत कुछ हल हो गयी और खिलाफत समस्या के कारण ही देश में असहयोग आंदोलन का जन्म हुआ। माखनलाल चतुर्वेदी कहते है कि हमारे पाठको में से शायद बहुतों को अभी तक यह मालूम नहीं होगा कि महात्मा गांधी ने उन्नतिशील असहयोग की घोषणा सबसे पहले खिलाफत कमेटी से ही करायी थी। सबसे पहले खिलाफत कमेटी ने ही अपनी इलाहाबाद की बैठक में असहयोग कार्यक्रम को अपनाया था।

मध्यप्रदेश में 'सेन्ट्रल प्रॉविन्सेस ट्रेनिंग एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी' लिमिटेड नाम की एक कम्पनी खुली। इसकी लागत चालीस लाख रू. थी। उसका उद्देश्य चमड़े के व्यापार को अपने हाथों में लेना था जो अभी तक जर्मनी के हाथों में हुआ करता था। जहां से जानवरों का चमड़ा सुखाकर जर्मनी भेजा जाता था, वहां से सारे संसार में बेचा जाता था। लेकिन सूखे चमड़े से अच्छा चमड़ा तैयार नहीं हो सकता था, जितना कि गीले चमड़े से हो सकता था।[14] इसलिए यह कम्पनी खोली गयी। सागर, खुरई, राहतगढ़ और घटेडा में उस समय मांस का व्यापार बहुत बढ़ा हुआ था। मध्यप्रदेश सरकार ने उस कम्पनी को रतौना में 843 एकड़ भूमि लगान पर दी और चमड़ा बनाने का 71,350 मन मसाला जितना जंगल में मिल सके, उतने जंगल का ठेका भी देने का वादा किया।

कम्पनी को 30 वर्ष तक व्यापार करने का अधिकार रहेगा और यदि सरकार चाहे तो समय बढ़कर 60 वर्ष कर दिया जायेगा। सरकार हर तरह से कम्पनी की सहायता करने को तैयार थी। उस कसाईखाने में 2,500 गाय–बैल रोज काटे जायेगे। कम्पनी के हिसाब से लगभग 2,00,000 (दो लाख) जानवर एक वर्ष में काटे जायेगें।[15] सन् 1920 में माखनलाल चतुर्वेदी बम्बई जा रहे थे। वे पाइनियर अखबार पढ़ रहे थे। उसके विज्ञापनो में उन्होंने 'सेन्ट्रल प्रॉविन्सेस ट्रेनिंग एण्ड ट्रेनिंग कम्पनी का विज्ञापन पढ़ा। इस कम्पनी का कसाईखाना सागर जिले के रतौना ग्राम में खुलने वाला था। उन्होंने आगे बढ़ना अनुचित समझा और चालीसगांव स्टेशन पर उतर गये। थोड़ी ही देर प्रतीक्षा करने के बाद वे दूसरी ट्रेन जो कि जबलपुर होकर कलकत्ता की ओर जाने वाली बम्बई मेल में बैठ गए। खण्डवा पहुंचते ही उन्होंने पहला लेख इस गोवध, कसाई खाना के खिलाफ 17 जुलाई सन् 1920 को अपने 'कर्मवीर' में लिखा। यह खबर मध्यप्रदेश और पूरे देश में फैल गयी। 'कर्मवीर' के जुलाई 1920 से लेकर दिसम्बर 1920 तक के अंक इसी रतौना आन्दोलन के लेखों से भरे पड़े है।[16] इस आंदोलन का प्रभाव व्यापक

रूप से फैलने के कारण अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा और आंदोलन भयंकर रूप न ले सके इस कारण रतौना कसाई खाना रोक दिया गया।

माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' का संपादन किया। जिसमें उन्होंने अपनी पत्रकारिता के माध्यम से अंग्रेजो के विरोध में विद्रोही स्वर भाषणों के रूप में जनता में फैलाये। अपने लेखो के द्वारा भारतीय युवा पीढ़ी को देश भक्ति के प्रति जाग्रत किया। उनमें विश्वास जगाया और उनको प्रोत्साहित करने के लिए सारी शक्ति लगा दी। गांधी जी के राष्ट्रीय आंदोलन में जेल जाने वाले आप मध्यप्रांत के सर्वप्रथम व्यक्ति थे। उनका अपराध था कि उन्होंने सच बात कही कि ''सन् सत्तावन में हमारे जो बाप–दादे लड़े, वे बहादुर थे (कायर कभी लड़ नही सकते)। ब्रिटिश राज के प्रेस एक्ट ने हमें नामर्द बना दिया है।''[17] दूसरी सच बात चतुर्वेदी ने यह कही कि डेढ सौ साल के अन्दर ब्रिटिश सरकार सिर्फ दस फीसदी हिन्दुस्तानियों को पढ़ा सकी। तीसरी बात यह थी कि सरकार की नीति देश के हित के विरूद्ध है। चौथी बात यह थी कि हमारे यहां के स्वदेशी कपड़े के व्यापार को नष्ट करने के लिए कम्पनी के नौकरों ने जुलाहों के अंगूठे काट डाले। किन्तु सच यह है कि कम्पनी के नौकरों से तंग आकर जुलाहों ने अपने अंगूठे काट डाले। पांचवी सच बात यह थी कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज लोग मुट्ठी भर है, यदि हम चाहे तो उनका कचूमर कर डाले, किन्तु कम तादाद वाले अंग्रेजों को मारना कायरता और नीचता है। छठवीं सच बात यह है कि सरकार को धोखा देने में हम सफल नहीं हो सकते क्योंकि ब्रिटिश सरकार से हम धोखेबाजी में नहीं जीत सकते और सातवी सच बात चतुर्वेदी जी ने यह कही कि हम अहिंसात्मक असहयोग से इस सरकार को खत्म कर देना चाहते हैं। इस तरह माखनलाल चतुर्वेदी जी ने स्वतंत्रता संग्राम में अपनी नयी रचनाओं, विचारो के माध्यम से स्वतंत्रता की अलख जगायी जो आज वर्तमान में भी हमें किसी न किसी रूप में ऊर्जावान बनाये हुए हैं।

अप्रैल 1919 में पंडित माधवराव सप्रे और पं. विष्णुदत्त शुक्ल ने जबलपुर से 'कर्मवीर' के प्रकाशन का निर्णय लिया और उसके संपादन का दायित्व माखनलाल को सौंपा। 11 जनवरी, 1920 को 'कर्मवीर' का पहला अंक प्रकाशित हुआ। उल्लेखनीय है कि गांधी जी के कर्मशील तपस्वी जीवन को आदर्श बनाकर माखनलाल ने इस पत्र का नाम 'कर्मवीर' रखा। कर्मवीर उनकी विचार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गया। जीवन के प्रति गहरी आसक्ति तथा कुरीतियों के प्रति क्रांतिकारी विद्रोह ने उनके पत्रकारीय लेखन को गहरे से प्रभावित किया। संभवतः इसी कारण उनका लेखन इतना विविधवर्णी और सर्वसमावेशी बन पड़ा। उन्हीं के शब्दों में यदि कहा जाए–तो 'मुझ पर व्यक्तित्व की दृष्टि से रामतीर्थ का जीवन की दृष्टि से ईसा का और संस्कारों की दृष्टि से वैष्णव परंपरा का प्रभाव पड़ा।'[18] पं. विष्णुदत्त शुक्ल के निधन के बाद राघवेन्द्र राव कर्मवीर के व्यवस्था मंडल के नए संचालक बने। कर्मवीर के नए व्यवस्था मंडल से मतभेदों के चलते उन्होंने नबम्वर 1922 में कर्मवीर का संपादकीय दायित्व छोड़ दिया। इसके पूर्व 1921 में राजद्रोह के अपराध में उन्होंने एक वर्ष जेल की सजा काटी थी। अंततः जबलपुर से 'कर्मवीर' का प्रकाशन बंद हो गया। 4 अप्रैल, 1925 से माखनलाल ने अपनी कर्मभूमि खंडवा से 'कर्मवीर' का पुनः प्रकाशन आरंभ किया और सन् 1959 तक इसका संपादकीय दायित्व निभाते रहे।

बिलासपुर में दिए गए क्रांतिकारी भाषण को आधार बनाकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस गिरफ्तारी पर महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' में लिखा ''हमें अपने साथियों के जेल जाने पर डरना नहीं चाहिए। मेरा विश्वास है कि पं. सुंदरलाल और अब माखनलाल स्वतंत्र रहने की अपेक्षा जेल में जाकर अपने देश की अधिक सेवा कर रहे हैं।''[19] इस मामले में कोर्ट में दिया गया माखनलाल जी का बयान गौरतलब है– ''मेरी अंतरात्मा निर्मल है और मैं विश्वास करता हूँ कि देश के प्रति सम्माननीय और योग्य कर्तव्य का पालन करने में मैंने किसी भी नैतिक कानून के प्रति अपराध नहीं किया। मैं इस या किसी भी ब्रिटिश कोर्ट से न्याय कराने के लिए जरा भी

उत्सुक नहीं हूँ। इस बयान को पेश करने में मेरी आंतरिक प्रेरणा है कि मैं इस शासन प्रणाली की दुष्टता प्रकट करने के पवित्र कर्तव्य का और अधिक पालन करूँ। मातृभूमि को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए इससे अच्छी सेवा नहीं कर सकता कि मैं उसके लिए खुशी से, धैर्य से, कष्ट सहन करूँ। मैं अपने देशवासियों को भी इसी मार्ग के अवलंबन करने की सिफारिश करता हूँ।''[20] 12 मई 1921 को पूरे महाकोशल क्षेत्र से राजद्रोह के आरोप में जेलयात्रा करने वाले पहले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी माखनलाल चतुर्वेदी ही थे।

निष्कर्ष– 18 जुलाई 1922 को नागपुर में झंडा सत्याग्रह के जुलूस का संचालन माखनलाल जी ने किया था। इसमें जवाहरलाल नेहरू और पुरूषोत्तमदास टंडन भी शामिल हुये थे। यह आंदोलन दिनों–दिन गति पकड़ रहा था और हर दिन नेताओं की गिरफ्तारियाँ हो रही थीं। 18 अगस्त, 1922 को सत्याग्रह के अंतिम झंडा–विजय जुलूस का नेतृत्व भी माखनलाल जी ने किया था। सन् 1926 में केन्द्रीय सभा के चुनाव के वक्त महाकोशल क्षेत्र में इसके संचालन का दायित्व माखनलाल के कंधों पर था, जिसमें कांग्रेस को भारी विजय प्राप्त हुई थी। 1930 के जंगल सत्याग्रह और नमक–सत्याग्रह में भी माखनलाल ने बढ़–चढकर हिस्सा लिया। इसी वर्ष सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी भाग लिया। इस आंदोलन में महाकोशल के जो पांच लोग गिरफ्तार हुए उनमें माखनलाल भी थे। 'कर्मवीर' में माधव सिद्धनाथ आगरकर ने लिखा[21]– वर्तमान नौकरशाही शरीर बल से नहीं डरती, वह तो भयाकुल है, उस चिनगारी से जो अनेकों में प्राणों का संचार करती है और इस प्राण–संचारक संजीवनी की माखनलाल में कोई कमी नहीं है। इस मामले में राजद्रोह और षड्यंत्र के आरोपों में उन्हें 2–2 वर्ष की कड़ी कैद की सजा दी गई थी।

संदर्भ–

1. जोशी, श्रीकान्त, माखनलाल चतुर्वेदी : यात्रा पुरूष, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1968, पृ. 09.
2. वही.
3. जोशी, श्रीकान्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–एक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृ. 163.
4. जोशी, श्रीकान्त, यात्रा पुरूष, पूर्वोक्त, पृ. 11.
5. वही.
6. बरूआ, ऋषि जैमिनी कौशिक, पूर्वोक्त, पृ. 263.
7. वही.
8. पालीवाल, कृष्णदत्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रचना–संचयन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2014, पृ. 17.
9. जोशी, श्रीकांत, माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–एक, पूर्वोक्त, पृ. 174.
10. वही.
11. 'बरूआ', ऋषि जैमिनी कौशिक, पूर्वोक्त, पृ. 279.
12. वही, पृ. 282.
13. जोशी, श्रीकान्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–एक, पूर्वोक्त, पृ. 176.
14. वही, पृ. 189.
15. वही, पृ. 176.
16. जोशी, श्रीकान्त, माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली, भाग–दो, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995, पृ. 191.
17. वही, पृ. 192.
18. बरूआ', ऋषि जैमिनी कौशिक, पूर्वोक्त, पृ. 263.
19. वही.
20. पालीवाल, कृष्णदत्त, पूर्वोक्त, पृ. 17.
21. जोशी, श्रीकांत, माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–एक, पूर्वोक्त, पृ. 174.